

श्रीः
श्रीमते रामानुजाय नमः
श्रीमते निगमास्तमहादेशिकाय नमः
श्रीसीतालम्बणभरतशङ्करहनुमत्समेत श्रीरामचन्द्र परब्रह्मणे नमः

श्रीमद्रामायणे बाल्मीकीये आदिकार्ये बालकाणे
॥ द्वात्रिंशः सर्गः ॥

This document has been prepared by

Sunder Kidāmbi

with the blessings of

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

His Holiness śrīmad āṇḍavan śrīraṅgam

श्रीः
श्रीमते रामानुजाय नमः
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः
श्रीसीतालम्बणभरतशङ्करहनुमत्समेत श्रीरामचन्द्र परब्रह्मणे नमः

॥ द्वात्रिंशः सर्गः ॥

ब्रह्मपुत्रस्य कुशस्य चतुर्णां पुत्राणां वर्णनं
शोणभद्रतटरतिभूतलस्योपरि रसोरधिकारस्य प्रतिपादनं
कुशनाभस्य कन्याशतस्य रायोः कोपेन कुञ्ज्वरम्

ब्रह्मयोनिर्महानासीं कुशो नाम महतपाः।
अक्लिष्टब्रतधर्मज्ञः सज्जनप्रतिपूजकः ॥ 1.32.1 ॥

स महान्ना कुलीनायां युक्तायां सुमहाबलान्।
रैदर्भ्यां जनयामास चतुरः सदृशान् सुतान् ॥ 1.32.2 ॥

कुशाम्बुं कुशनाभं च असूर्तरजसं रसुम्।
दीप्तियुक्तान् महोत्साहान् श्मश्रुधर्मचिकीर्षया ॥ 1.32.3 ॥

तानुराच कुशः पुत्रान् धर्मिष्ठान् सत्यरादिनः।
क्रियतां पालनं पुत्रा धर्मं प्राप्स्यथ पुङ्गवम् ॥ 1.32.4 ॥

कुशस्य रचनं श्रुत्वा चत्वारो लोकसत्तमाः।
निवेशं चक्रिरे सर्वे पुराणां नृररास्तदा ॥ 1.32.5 ॥

कुशाम्बु महातेजाः कौशाम्बीमकरोत् पुरीम्।
कुशनाभस्तु धर्मात्मा पुरं चक्रे महोदयम् ॥ 1.32.6 ॥

असूर्तरजसो नाम धर्मारण्यं महामतिः।
चक्रे पुरवरं राजा रसुनाम गिरिब्रजम् ॥ 1.32.7 ॥

এষা রসুমতী নাম রসোস্তস্য মহাত্মনঃ।
এতে শৈলররাঃ পঞ্চ প্রকাশন্তে সমন্ততঃ ॥ 1.32.8 ॥

সুমাগধী নদী রম্যা মাগধান্ রিঞ্চতাহহযযৌ।
পঞ্চানাং শৈলমুখ্যানাং মধ্যে মালের শোভতে ॥ 1.32.9 ॥

সৈষা হি মাগধী রাম রসোস্তস্য মহাত্মনঃ।
পূর্বাভিচরিতা রাম সুক্ষেত্রা সস্যমালিনী ॥ 1.32.10 ॥

কুশনাভস্ত রাজর্ষিঃ কন্যাশতমনুত্তমম্।
জনযামাস ধর্মায়া ঘৃতাচ্যাং রঘুনন্দন ॥ 1.32.11 ॥

তাস্ত যৌরনশালিন্যো রূপরত্যঃ স্বলঙ্কৃতাঃ।
উদ্যানভূমিমাগম্য প্রাবৃষীর শতহৃদাঃ ॥ 1.32.12 ॥

গায়ন্ত্যো নৃত্যমানাশ্চ রাদযন্ত্যস্ত রাঘর।
আমোদং পরমং জগুরঁরাভরণভূষিতাঃ ॥ 1.32.13 ॥

অথ তাশ্চারুসর্বাঙ্গ্যো রূপেণাপ্রতিমা ভুরি।
উদ্যানভূমিমাগম্য তারা ইর ঘনান্তরে ॥ 1.32.14 ॥

তাঃ সর্বা গুণসম্পন্না রূপযৌরনসংযুতাঃ।
দৃষ্ট্বা সর্বাঅকো রাযুরিদং রচনমব্রবীৎ ॥ 1.32.15 ॥

অহং রঃ কামযে সর্বা ভার্যা মম ভরিষ্যথ।
মানুষস্ত্যজ্যতাং ভারো দীর্ঘমাযুররাঙ্গ্যথ ॥ 1.32.16 ॥

চলং হি যৌরনং নিত্যং মানুষেষু বিশেষতঃ।
অক্ষয়ং যৌরনং প্রাপ্তা অমর্যশ্চ ভরিষ্যথ ॥ 1.32.17 ॥

তস্য তদ্ রচনং শ্ৰুৎৱা রাযোরক্লিষ্টকর্মণঃ।
অপহাস্য ততো রাক্যং কন্যাশতমথাব্রবীৎ ॥ 1.32.18 ॥

অন্তশ্চরসি ভূতানাং সর্বেষাং সুরসত্তম।
প্রভারজ্ঞাশ্চ তে সর্বাঃ কিমর্থমরমন্যসে ॥ 1.32.19 ॥

কুশনাভসুতা দেব সমস্তাঃ সুরসত্তম।
স্থানাচ্চারযিতুং দেবং রক্ষামস্ত তপো রযম্ ॥ 1.32.20 ॥

মা ভূৎ স কালো দুর্মেধঃ পিতরং সত্যরাদিনম্।
অরমন্য স্বধর্মেণ স্বযং ররমুপাস্মহে ॥ 1.32.21 ॥

পিতা হি প্রভুরস্মাকং দৈবতং পরমং চ সঃ।
যস্য নো দাস্যতি পিতা স নো ভর্তা ভরিষ্যতি ॥ 1.32.22 ॥

তাসাং তু রচনং শ্ৰুৎরা হরিঃ পরমকোপনঃ।
প্রিষ্য সর্গাত্ৰাণি বভঞ্জ ভগরান্ প্রভুঃ ॥ 1.32.23 ॥

অরহ্নিমাত্রাকৃতযো ভগ্নগাত্রা ভযাদিতাঃ।
তাঃ কন্যা রাযুনা ভগ্না রিরিশুর্নূপতের্গৃহম্।
প্রিষ্য চ সুসম্ভ্রান্তাঃ সলজ্জাঃ সাস্ত্রলোচনাঃ ॥ 1.32.24 ॥

স চ তা দযিতা ভগ্নাঃ কন্যাঃ পরমশোভনাঃ।
দৃষ্টরা দীনাস্তদা রাজা সম্ভ্রান্ত ইদমব্রবীৎ ॥ 1.32.25 ॥

কিমিদং কথ্যতাং পুত্র্যঃ কো ধর্মমরমন্যতে।
কুজাঃ কেন কৃতাঃ সর্বাশ্চেষ্টন্ত্যে নাভিভাষথ।
এবং রাজা রিনিঃশ্রস্য সমাধিং সন্দধে ততঃ ॥ 1.32.26 ॥

॥ ইত্যর্ষে শ্রীমদ্রামায়ণে রাল্মীকীয়ে আদিকার্যে বালকাণ্ডে দ্বাত্রিংশঃ সর্গঃ ॥